

# रोमियों की पत्री 4

## Hindi Bible Class - Pr.Valson Samuel

आइए हम प्रार्थना के साथ प्रभु की पत्री के सातवें अध्याय पर ध्यान करें। यह परमेश्वर के वचन में समझने के लिए एक बहुत ही कठिन अध्याय है। इस अध्याय पर आधारित कई चर्चाएँ और आलोचनाएँ हैं। हालाँकि, यह परमेश्वर का आत्मा है जो हमें इन अंशों को प्रकट करना चाहिए। यह परमेश्वर के वचन में सबसे कम विचारोत्तेजक अध्यायों में से एक है। क्योंकि प्रेरित के मन में यह जानना थोड़ा मुश्किल है कि वह क्या संवाद कर रहा है। परमेश्वर का आत्मा स्वयं मुझ पर मेरी जीभ और तुम्हारे हृदयों में प्रकट होना चाहिए। इस अध्याय से प्रेरित का क्या अर्थ है, इस पर विचार करने के लिए, हमें इसके संदर्भ और इसके अंतर्विरोध को समझने की आवश्यकता है। जब हमने मानवजाति के बारे में सीखा, तो हमने मनुष्य में उसकी स्वतंत्र इच्छा के बारे में सोचा। जब ईश्वर ने यह इच्छा या इच्छा शक्ति मनुष्य को दी है, तो इसे मनुष्य की स्वतंत्रता पर छोड़ दिया गया है। परमेश्वर की स्वतंत्र इच्छा का वह क्षेत्र हमारे भीतर यह देखने के लिए दिया गया है कि मनुष्य परमेश्वर का पालन करता है या परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन बिना किसी अन्य प्रभाव के करता है। हम इसका पहला दृश्य ईडन में देख सकते हैं। दो पेड़ हैं। एक जीवन का वृक्ष है और दूसरा अच्छाई और बुराई के ज्ञान का वृक्ष है। तब परमेश्वर ने आज्ञा दी। उत्पत्ति 2: 17 पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा ॥ तब परमेश्वर उसे अपने निर्णय स्वयं करने देता है। यह जानना है कि मनुष्य परमेश्वर का पालन करता है या परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करता है। यह इच्छा का क्षेत्र है जिसका आज और अनुग्रह के इस युग में स्वतंत्र रूप से उपयोग किया जा सकता है। उसी तरह, प्रभु यीशु मसीह ने अपने जीवन, शिक्षाओं और सेवकाई के द्वारा परमेश्वर की आज्ञाओं को हमारे सामने रखा। हमारे पास एक और व्यवस्था है जो परमेश्वर की आज्ञाओं के विपरीत है। यानी हमारे भीतर पाप है। इस तरह प्रेरित को पता चला कि पाप मुझ में रहता है। जब हम पाप के बारे में सोचते हैं, तो ऐसे पाप होते हैं जो हम करते हैं और पिछले पाप होते हैं यही हम पहले ही कर चुके हैं। लेकिन हमारे भीतर एक शर्त है कि पाप हम में फिर से काम करता है। चार मुख्य सिद्धांत हैं जो बाइबल हमें सिखाती है। एक है कानून। जब प्रेरित लिखता है कि यह कानून है, तो यह कानून है जो मर चुका है। यानी व्यवस्था आध्यात्मिक है। रोमियों के

सातवें अध्याय में हम देखते हैं कि व्यवस्था पवित्र है। व्यवस्था परमेश्वर की ओर से है, परन्तु जो उसकी अनादर करता है वह एक तन है। मनुष्य में दो परमेश्वर का आत्मा मौजूद नहीं थी। अर्थात्, नया नियम तब है जब परमेश्वर का आत्मा हमारे भीतर वास करता है और छियासठ पुस्तकों के सिद्धांत हमारे भीतर जीवन के सिद्धांत के रूप में लिखे गए हैं। जैसा कि हम इब्रानियों की पुस्तक में, यहजेकेल की पुस्तक में, और यिर्मयाह की पुस्तक में पढ़ते हैं, हम एक नई व्यवस्था के बारे में बात कर रहे हैं। यिर्मयाह का इकतीसवां पद इकतीस **परन्तु जो वाचा मैं उन दिनों के बाद इस्राएल के घराने से बान्धूंगा, वह यह है: मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊंगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूंगा; और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, यहोवा की यह वाणी है।** यह व्यवस्था शब्द का उपयोग करता है। रोमियों के आठवें अध्याय के चौथे पद को पढ़ते समय **इसलिये कि व्यवस्था की विधि हम में जो शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए।** यहां जो लिखा है वह व्यवस्था का न्याय नहीं है। तब व्यवस्था पवित्र और आत्मिक है, परन्तु क्योंकि मनुष्य शारीरिक है रोमियों की पत्री के सातवें अध्याय के सातवें पद में इसे इस प्रकार देखा जाता है। **इसलिये व्यवस्था पवित्र है, और आज्ञा भी ठीक और अच्छी है।** रोमियों अध्याय 7 पद चौदह में **क्योंकि हम जानते हैं कि व्यवस्था तो आत्मिक है, परन्तु मैं शरीरिक और पाप के हाथ बिका हुआ हूं।** तो जब हम शरीर में रहते हैं, तो यह वह अवस्था है जिसमें हम आत्मा के स्पर्श के बिना रहते हैं। मसीह सिद्धांत के रूप में कुछ भी नया नहीं लाया। प्रभु के सभी सिद्धांत पुराने नियम की उनतीस पुस्तकों में से हैं। प्रभु यीशु मसीह ने स्वयं को मूसा की पुस्तक, भजन संहिता की पुस्तक और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तक से प्रकट किया। प्रेरित ने अपनी सेवकाई में भी इन तीन पुस्तकों का प्रयोग किया। रोमियों की पुस्तक भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों में छिपे रहस्य को उजागर करती है। हम इसे पिछले अध्याय में देखते हैं। अतः प्रेरित जो समझाना चाहता है वह यह है कि व्यवस्था सामान्यतः यहूदियों के लिए है। क्योंकि वे व्यवस्था के कामों में फंसे हुए हैं। तब हमें व्यवस्था और व्यवस्था के कार्यों के बीच के अंतर को समझना चाहिए। वहाँ खतना होते हैं, वहाँ रस्में होती हैं, वहाँ वाह-वाह महीनों लग रहे त्योहारों को मनाते हैं, इसमें कोई जीवन नहीं है। लेकिन प्रभु यीशु ये सब पूरा किया। उस सिद्धांत को हमारे जीवन में भी पूरा करना चाहिए। फसह

हमारे जीवन में पूरा होना चाहिए, मनाया नहीं जाना चाहिए। फसह की वह आध्यात्मिकता हमारे भीतर पूरी होनी चाहिए। इसे जीवन भर पूरा करना चाहिए। जब वे अखमीरी रोटी का पालन करते हैं, तो हमारे जीवन में अखमीरी रोटी और पवित्र जीवन की वास्तविकता पूरी होनी चाहिए। पुराने नियम में जब वे पहले फलों के पूले के साथ मंदिर में आते हैं, तो इसका अर्थ है यीशु मसीह पहला फल मसीह का पहला फल होना चाहिए, जो एक तरह से हमारे जैसा ही है। पेंटेकोस्ट सिर्फ बपतिस्मा के बारे में नहीं है, यह पेंटेकोस्ट के माध्यम से एक चर्च की स्थापना के बारे में है। पुराने नियम में जब वे होरेब आते हैं तो वे दस्तावेज प्राप्त करते हैं और मंदिर का मॉडल प्राप्त करते हैं। जब उसी के अनुसार निवास का निर्माण किया गया, तो परमेश्वर के तेज ने उसे भर दिया और उसे एक बादल से ढक दिया। वाचा के सन्दूक के भीतर, वाचा का सन्दूक परमेश्वर की आवाज है जो दो करूबों के बीच बोल रहा है: तब यह हमारे जीवन में पूरा होना चाहिए। हम नए नियम में आत्मिक ग्रह हैं। वह मिलन का तम्बू हम हैं। हमारे पास परमपवित्र स्थान, पवित्र स्थान और आंगन आत्मा, आत्मा, शरीर। तब मिलापवाले तम्बू की व्यवस्था के सन्दूक में पटियाओं पर शिलालेख भी है। इसमें जान नहीं है, यह पत्थर की पट्टियों पर लिखा हुआ एक दस्तावेज है। लेकिन यह हमारे जीवन में परमेश्वर के आत्मा द्वारा पूरा होता है यह तब होता है जब जीवन का शब्द या शब्द हमारे भीतर जीवित लिखा होता है। फिर पिन्तेकुस्त नाम का मंदिर है। हमने मंदिर के काम के बारे में थोड़ा सोचा। आध्यात्मिक ग्रह। पीटर ॥ के पांचवें पद में से एक **तुम भी आप जीवते पत्थरों की नाई आत्मिक घर बनते जाते हो, जिस से याजकों का पवित्र समाज बन कर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हों।** इसे हमारे जीवन में भी पूरा करना चाहिए इसे परमेश्वर की कलीसिया में भी पूरा किया जाना चाहिए। तब हम जानते हैं त्योहार कहलाडवानी ईद, प्रायश्चित्त पर्व और तम्बू पर्व हैं। यीशु के पाप के प्रायश्चित्त के बाद, वह स्वर्गीय महायाजक के रूप में पिता के दाहिने हाथ पर बैठा है। पिन्तेकुस्त की शिक्षा पिन्तेकुस्त पर रुकेगी शेष तीन त्योहारों को आगामी त्योहारों के रूप में दिखाया गया है। एक हद तक यह सच है। लेकिन यह आध्यात्मिक जीवन में है कि अब हमारे जीवन में उन तीन त्योहारों

को पूरा करना होगा। अर्थात्, यहोवा ने पवित्रस्थान का द्वार पहले ही खोल दिया था। उस फैलोशिप में आने के लिए हमारे पास रक्त के माध्यम से पहुंच है। जॉन का सुसमाचार पंद्रहवां अध्याय चौथा छंद **तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में: जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते।** इस प्रकार यूहन्ना के बारहवें अध्याय का छब्बीसवाँ पद **यदि कोई मेरी सेवा करे, तो मेरे पीछे हो ले; और जहां मैं हूँ वहां मेरा सेवक भी होगा; यदि कोई मेरी सेवा करे, तो पिता उसका आदर करेगा।** इफिसियों 2:7 में लिखा है कि हम स्वर्गीय स्थानों में विराजमान हैं। तब हमें परमेश्वर के वचन को उस माप में देखना चाहिए। अर्थात्, परमेश्वर के वचन के सभी सत्य हमारे जीवन में अवश्य पूरे होने चाहिए। हव्वा के बगीचे में उस पेड़ के सामने खड़े होने पर याद करने की स्वतंत्र इच्छा होती है, दूसरी ओर, परमेश्वर की आज्ञा के बारे में एक और सलाह सुनें, लेकिन हम देख सकते हैं कि वह उस नई शिक्षा के अधीन है। अर्थात् भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष। यह उसकी पसंद है। परमेश्वर ने आज्ञा दी, परन्तु वह उस आज्ञा के अनुसार जीवित रहे। लेकिन जब एक और सलाह आई, तो उसकी स्वतंत्र इच्छा उस सलाह पर पड़ गई। क्योंकि यह बहुत ही आकर्षक था। उत्पत्ति तीन में से छह में देखी जाती है **सो जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिये चाहने योग्य भी है, तब उसने उस में से तोड़कर खाया; और अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया।** शरीर की अभिलाषा, आंखों की अभिलाषा और जीवन का घमंड । [1 यूहन्ना: 2:16] तब उसने चुन लिया कि क्या गलत है और परमेश्वर के वचन के विपरीत है और अपने पति को दे दी और उसने उसे खा लिया। इसके माध्यम से वह मृत्यु के अधीन एक शरीर बन गया। या पाप के अधीन शरीर बन गया वही आदमिक आदमी है। यह ईश्वर द्वारा बनाया गया शरीर है लेकिन यह सब पाप का दास बन गया है। मनुष्य पाप के अधीन शरीर में गिर गया। परमेश्वर के वचन में हम उस आदमी को आदम के रूप में देखते हैं। रोमियों को पत्री के छठे अध्याय के दूसरे पद में **कदापि नहीं, हम जब पाप के लिये मर गए तो फिर आगे को उस में क्योंकर जीवन बिताएं?** पाप संबंध को चित्रित किया जा

सकता है जब रिश्तों की बात आती है, तो यह पुराने दिनों में एक शादी है। रिश्ता, रिश्ता। जब हम 'योग' कहते हैं, तो वह अपने आप में होता है या सारा संसार है। जब बात होती है तो दुनिया हम में होती है और हम इसके बारे में बात करते हैं। सारांशित करें, समझें, लेकिन जब हम संक्षेप में कहते हैं, तो यह हमारे भीतर हमारा एक हिस्सा बन जाता है। तब 'योग' शब्द का बहुत अर्थ होता है। यहाँ रिश्ते के लिए एक शब्द है। पाप संबंध। जब उसने पाप किया, तो परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करते हुए उसके साथ संबंध बना लिया। यह कहा जा सकता है कि वह एक शादी में आया था। विवाह के बारे में यहोवा जो कहता है वह अब एक नहीं है, तुम दोनों एक शरीर बन जाते हो। फिर ऐसे रिश्ते को मरना ही पड़ता है। यही प्रभु यीशु मसीह ने कलवारी पर हमारे लिए संभव बनाया। रोमियों की अध्याय छह के दसवें पद में **क्योंकि वह जो मर गया तो पाप के लिये एक ही बार मर गया; परन्तु जो जीवित है, तो परमेश्वर के लिये जीवित है।** पाप के साथ उस संबंध को यीशु मसीह के द्वारा मौत के घाट उतार दिया जाना चाहिए। इसलिए हमें यह समझने की जरूरत है कि यह आधार क्या है या इन शब्दों का क्या अर्थ है और इसका क्या अर्थ है। या कोई फायदा नहीं हुआ। हम बस पढ़ते हैं और चले जाते हैं। मैं पाप से मरा और मैं परमेश्वर से पूछने लगा कि यह क्या है। जब मैंने पड़ताल करनी शुरू की तो उस रिश्ते शब्द का अर्थ अचानक मेरे सामने आया। किसी ने मुझे नहीं बताया कि मेरे अंदर परमेश्वर का आत्मा ने मुझे याद दिलाया। आत्मा ने हमें याद दिलाया कि पाप शब्द का अर्थ एक होना है। पाप हमारे भीतर पाप का निवास करने और एक ऐसा अनुभव बनने का अनुभव है जिसमें हम और पाप एक साथ रहते हैं। यह प्रेरित द्वारा प्राप्त एक प्रकाशन है कि पाप मुझ में एक साथ रहता है। पति-पत्नी एक साथ रहने के रिश्ते में हैं। रोमियों की पत्नी के छठे अध्याय में दसवीं पद **क्योंकि वह जो मर गया तो पाप के लिये एक ही बार मर गया; परन्तु जो जीवित है, तो परमेश्वर के लिये जीवित है।** तब हमारे शरीर का संबंध पाप से है। उस शरीर को कलवारी पर प्रभु द्वारा सूली पर चढ़ाया गया था। रोमियों 6: 6 **क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें।** जब हम कहते हैं कि हम अब

पाप के बंधन में नहीं हैं, तो हम पाप के शरीर में हैं, अर्थात् शरीर जो पाप से संबंधित है। तब हमें यह जानने की जरूरत है। हमें उस महान मुक्ति को प्राप्त करने की आवश्यकता है। तीन या चार स्थानों पर लिखा है कि यह पापपूर्ण है। रोमियों की पत्री के छठे अध्याय के दूसरे पद में **कदापि नहीं, हम जब पाप के लिये मर गए तो फिर आगे को उस में क्योंकर जीवन बिताएं ?** तब वह रिश्ता ही दूर हो जाएगा। मसीह के द्वारा ही हमें संभव बनाया गया है। मुझे इसे फिर से समझाएं। जो हम रोमियों अध्याय 6, पद 10 में पढ़ते हैं। **क्योंकि वह जो मर गया तो पाप के लिये एक ही बार मर गया; परन्तु जो जीवित है, तो परमेश्वर के लिये जीवित है।** इसलिए यदि हमें परमेश्वर के लिए जीना है, तो हमें मसीह के साथ पाप के लिए मरना होगा। मसीह ने इसे संभव बनाया। बपतिस्मे के लिए हम जो निर्णय लेते हैं, वह मसीह के साथ एकता में बपतिस्मा लेना है पाप के लिए मरने के लिए। यह एक समर्पण है जिसे हम लेते हैं। हम अक्सर नहीं जानते, लेकिन इसे सिखाया जाना चाहिए। बपतिस्मा लेने वाले उम्मीदवारों को यह सिखाया जाना चाहिए कि मसीह में शामिल होने के लिए पाप के साथ कैसे मरना है। तब वह परमेश्वर के लिए रहता है। फिर यदि हम परमेश्वर के लिए जीना चाहते हैं, तो हमें ऐसे जीवन में आना चाहिए जो पाप से मर जाए। उस रिश्ते से हमें उसके लिए एक मौत का सामना करना पड़ता है और उसे खत्म करना पड़ता है। फिर जब हम उस जीवन में आते हैं तो हम पूरी तरह से परमेश्वर के लिए जीते हैं। रोमियों अध्याय छह, पद ग्यारह। **ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के लिये तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह यीशु में जीवित समझो।** हमें यह सब याद रखना चाहिए और विश्वास से इसे प्राप्त करना चाहिए। जैसामुझे पता है, मैं यह नहीं कह रहा हूं कि मैं इसमें विश्वास करता हूं, यह उससे कहीं अधिक है। कि मैं आपको याद दिलाता रहता हूं कि विश्वास सिर्फ एक छाप नहीं है, मसीह में यह संभव है कि हमें पाप के लिए मरना नहीं है। यह दो हजार साल पहले की बात है जब यीशु कलवारी पर पाप के क्रूस पर मर गया था, और जब हमें यह विश्वास करने के लिए बपतिस्मा दिया गया था कि पाप का संबंध प्रभु द्वारा पूरा किया जाएगा जब उसे हमेशा के लिए सूली पर चढ़ा दिया जाएगा, और उस बपतिस्मा के बाद मैं इतना मर गया था बपतिस्मा के बाद हमारा मन। फिर हमें

हर दिन इस अहसास के साथ जीना चाहिए कि मैं मरा ताकि परमेश्वर मसीह यीशु में जीवित रहे। तो उस पाप के लिए मरना हमारे जीवन में एक वास्तविकता होनी चाहिए। यह एक वास्तविकता बन जाती है जब हम हर दिन इस आध्यात्मिक प्रकाशन में रहते हैं। 1 पतरस 2 दूसरा अध्याय चौबीसवाँ पद है। **वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया जिस से हम पापों के लिये मर कर के धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं: उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए।** ये दो पहलू निश्चित रूप से हमारे भीतर होना चाहिए। दूसरी ओर, परमेश्वर के लिए सोचें और जिएं। 1 पतरस 2 दूसरा अध्याय चौबीसवाँ पद है **वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया जिस से हम पापों के लिये मर कर के धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं: उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए।** फिर आपको इस पर बार-बार ध्यान करना होगा। पाप के लिए मरना होगा, मसीह ने हमारे लिए इसे संभव बनाया, धार्मिकता के लिए जिएं, हम मसीह में नहीं रहते। दो कुरिन्थियों अध्याय 5 पद 17 में **सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गईं।** यही वास्तविकता होनी चाहिए। तुम कहाँ रहते हो, जैसा कि परमेश्वर की आत्मा ने मुझसे पूछा था ? दुनिया में रहते हैं? या यह मसीह में है ? दुनिया में ज्यादातर समय हम दुनिया में रहते हैं अगर हमारा मन, अगर हमारा दिल, अगर हमारी इच्छा है। बपतिस्मा लें, बपतिस्मा लें, सभी संस्कार करें लेकिन हम कहाँ हैं? क्या आप मसीह में हैं ? सभी आशीषें हमें मसीह में दी गई हैं। स्वर्ग की सारी आत्मिक आशीषें हमें मसीह यीशु में दी गई हैं। यदि हम खोजते हैं कि वचन में मसीह यीशु में क्या है, विशेष रूप से इफिसियों और कुलुस्सियों में, तो इस शब्द का प्रयोग अक्सर यह अर्थ निकालने के लिए किया जाता है कि यह हमारे छुटकारे से लेकर अनंत काल तक मसीह यीशु में है। फिर पाप के लिए मरो: एक शरीर जो पाप के अधीन है, या मनुष्य, या आदम से संबंधित है, उसे मसीह के साथ मरना चाहिए। इन स्थानों में हम यही शब्द देखते हैं, कि इस पाप के लिए मरना। और फिर एक और मौत है अर्थात्, रोमियों की पत्री का सातवाँ अध्याय इसका चौथा पद। **सो हे मेरे भाइयो, तुम भी मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिये मरे हुए बन गए, कि उस दूसरे के हो जाओ, जो मरे हुआओं में से**

**जी उठा: ताकि हम परमेश्वर के लिये फल लाएं।** तब फिर से हमें पुराने नियम की ओर वापस जाना होगा। हम इसका आधार जानते हैं इस्राएलियों को मिस्र से छुड़ाया गया, और वे होरेब की तलहटी में आ गए। यहीं पर यहोवा परमेश्वर ने मूसा के द्वारा दैवीय आज्ञाएँ दी हैं। रेगिस्तान में चर्च "वह है जिसे हम प्रेरितों के काम के सातवें अध्याय में, स्तिफनुस के उपदेश में पढ़ते हैं। यहीं से व्यवस्था का युग शुरू होता है। व्यवस्था का युग अभी शुरू नहीं हुआ है। यह व्यवस्था के युग की शुरुआत है। व्यवस्था का वह युग निर्गमन की पुस्तक में आरम्भ होता है। निर्गमन अध्याय चौबीस और पद चार पढ़ें। **तब मूसा ने यहोवा के सब वचन लिख दिए। और बिहान को सवेरे उठ कर पर्वत के नीचे एक वेदी और इस्त्राएल के बारहों गोत्रों के अनुसार बारह खम्भे भी बनवाए। तब उसने कई इस्त्राएली जवानों को भेजा, जिन्होंने यहोवा के लिये होमबलि और बैलों के मेलबलि चढ़ाए। और मूसा ने आधा लोह तो ले कर कटारों में रखा, और आधा वेदी पर छिड़क दिया। तब वाचा की पुस्तक को ले कर लोगों को पढ़ सुनाया; उसे सुनकर उन्होंने कहा, जो कुछ यहोवा ने कहा है उस सब को हम करेंगे, और उसकी आज्ञा मानेंगे। तब मूसा ने लोह को ले कर लोगों पर छिड़क दिया, और उन से कहा, देखो, यह उस वाचा का लोह है जिसे यहोवा ने इन सब वचनों पर तुम्हारे साथ बान्धी है।** मूसा को ये आज्ञाएँ परमेश्वर से चालीस दिन और चालीस रात मिलीं। फिर वह पहाड़ की तलहटी में एक वेदी बनाता है।

इस्त्राएल के बारह गोत्रों की गिनती के अनुसार बारह खम्भे। स्तंभ परमेश्वर के चर्च की नींव है। निर्गमन, अध्याय चौबीस, पद पांच **तब उसने कई इस्त्राएली जवानों को भेजा, जिन्होंने यहोवा के लिये होमबलि और बैलों के मेलबलि चढ़ाए। और मूसा ने आधा लोह तो ले कर कटारों में रखा, और आधा वेदी पर छिड़क दिया। तब वाचा की पुस्तक को ले कर लोगों को पढ़ सुनाया; उसे सुनकर उन्होंने कहा, जो कुछ यहोवा ने कहा है उस सब को हम करेंगे, और उसकी आज्ञा मानेंगे। तब मूसा ने लोह को ले कर लोगों पर छिड़क दिया, और उन से कहा, देखो, यह उस वाचा का लोह है जिसे यहोवा ने इन सब वचनों पर तुम्हारे साथ बान्धी है।** ताकि परमेश्वर की सन्तान, जिन्होंने मेरे साथ मेलबलि करके वाचा बान्धी है, निकट

आएं यह उस पर आधारित है जो हम भजन संगीता 50 में पढ़ते हैं। तो बलिदान की यह व्यवस्था यहाँ परमेश्वर के उन वचनों के अनुरूप है [ व्यवस्था की पुस्तक ] यह एक वाचा है। इसे पृथ्वी पर अनुबंध कहा जाता है। इन्हें स्वर्ग में प्रतिज्ञा के नियम कहा जाता है। अर्थात्, सभी प्रतिज्ञाएँ स्वर्ग के नियमों पर आधारित हैं, यही प्रतिज्ञा की व्यवस्था है। अब हम उस हिस्से पर आते हैं जहाँ हम बीच के मैदान की बात करते हैं। यह शैतान की हरकत है। मनुष्य का उपयोग शैतान द्वारा किया जा रहा है। परन्तु वचन में हम प्रतिज्ञात व्यवस्थाओं को देखते हैं। यह भी पृथ्वी पर है। यह सभी नियमों पर आधारित है इसकी पूर्ति। मैं आपको एक और उदाहरण याद दिला दूँ जो मुझे हमेशा याद रहता है। अगर पानी गर्म करना है तो उसका एक नियम है। इसे पानी में गर्म करें, जब यह 100 डिग्री सेंटीग्रेड पर पहुंच जाए तो इसमें उबाल आ जाएगा। फिर यह एक व्यवस्था है। अगर वह व्यवस्था ऐसा करता है तो ही हम उसकी पूर्ति में पाएंगे। तभी हम परमेश्वर के नियमों का पालन करते हैं। हर व्यवस्था के पीछे एक वादा होता है। जब हम उन ईश्वरीय नियमों का पालन करते हैं तो हमें प्रतिज्ञा विरासत में मिलती है। लेकिन यहां इस नियम से कम क्या है कि यह अक्षरों में लिखा हुआ एक दस्तावेज है। अब हमारे पास एक मुद्रित पुस्तक में लिखा हुआ एक दस्तावेज है। फिर अगर वह वहीं है तो उसका कोई जीवन नहीं है। हमारे लिए जीना संभव नहीं है, इसलिए इसे पत्थर पर लिखा हुआ दस्तावेज कहा जाता है। जब प्रेरित ने व्यवस्था लिखी, तो उसका अर्थ था मृतकों की व्यवस्था। जीवन है लेकिन हम कामुक हैं। रोमियों की पत्री के सातवें अध्याय में सिद्धांत जीवित है लेकिन हमारे पास यह जीवित है क्योंकि हम शारीरिक हैं। रोमियों की पत्री के सातवें अध्याय का चौदहवाँ पद। **क्योंकि हम जानते हैं कि व्यवस्था तो आत्मिक है, परन्तु मैं शरीरिक और पाप के हाथ बिका हुआ हूँ।** मैंने आपको याद दिलाया कि जब हम पाप के संपर्क में आते हैं, तो वह शरीर है, आत्मा नहीं, जो उसमें काम करती है। तब जब वह शरीर कार्य करेगा, तो हम आत्मिक दस्तावेज प्राप्त नहीं करेंगे। तब परमेश्वर ने व्यवस्था मूसा के हाथ में दे दी। इसका एक उदाहरण प्रभु यीशु मसीह के परीक्षण के दौरान व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के पदों का उपयोग है। फिर उस शब्द में जीवन है। व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के आठवें अध्याय के तीसरे

पद में 3उसने तुझ को नम्र बनाया, और भूखा भी होने दिया, फिर वह मन्ना, जिसे न तू और न तेरे पुरखा ही जानते थे, वही तुझ को खिलाया; इसलिये कि वह तुझ को सिखाए कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं जीवित रहता, परन्तु जो जो वचन यहोवा के मुंह से निकलते हैं उन ही से वह जीवित रहता है। इसलिए हम शैतान को हराते हैं। फिर उस शब्द में जीवन है। शब्द में शक्ति है। लेकिन हमारी समस्या यह है कि हम शरीर हैं। इस्राएल के बच्चों में आत्मा का कोई कार्य नहीं था। तो मुझसे यह मत पूछो कि परमेश्वर ने ऐसा कानून युग क्यों शुरू किया। इसका उत्तर हां है, लेकिन यह हमारा विषय नहीं है, इसलिए मैं इसमें नहीं जाऊंगा। फिर नए नियम में अब हम निर्गमन की पुस्तक में जो कुछ पढ़ते हैं उसकी पूर्ति देखते हैं। आइए हम लूका के सुसमाचार पर आते हैं आइए हम बाईसवें अध्याय और उसके उन्नीसवें पद को पढ़ें। **फिर उस ने रोटी ली, और धन्यवाद करके तोड़ी, और उन को यह कहते हुए दी, कि यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिये दी जाती है: मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।** यूहन्ना का सुसमाचार छठे के पचपनवें भाग में है जॉन के सुसमाचार के छठे अध्याय के सत्ताईसवें पद में **जैसा जीवते पिता ने मुझे भेजा और मैं पिता के कारण जीवित हूं वैसा ही वह भी जो मुझे खाएगा मेरे कारण जीवित रहेगा।** हम देखते हैं कि वह है **फिर उस ने रोटी ली, और धन्यवाद करके तोड़ी, और उन को यह कहते हुए दी, कि यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिये दी जाती है: मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।** जब हम संवाद करते हैं, तो रोटी शरीर नहीं, बल्कि परमेश्वर का वचन है। यूहन्ना के सुसमाचार के छठे अध्याय के पद में **जीवन की रोटी जो स्वर्ग से उतरी मैं हूं। यदि कोई इस रोटी में से खाए, तो सर्वदा जीवित रहेगा और जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिये दूंगा, वह मेरा मांस है।** प्रभु कहते हैं। तो यह जीवन का वचन है जिसे हमें, नए नियम के संतों को प्राप्त करने की आवश्यकता है। यह उपलब्ध नहीं है यदि हम केवल वचन को पढ़ते हैं। जब हम ध्यान करते हैं तो वचन आत्मा में ग्रहण किया जाना चाहिए, या हम अभी भी व्यवस्था के युग में हैं। पुस्तक में केवल एक दस्तावेज है। तब हमें इसे जीवित प्राप्त करना होगा। यही नए नियम का रहस्य है। नहीं तो फर्क पड़ेगा। जब लूका अध्याय बाईस इसके उन्नीसवें पद को पढ़ते हैं **फिर उस ने**

रोटी ली, और धन्यवाद करके तोड़ी, और उन को यह कहते हुए दी, कि यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिये दी जाती है: मेरे स्मरण के लिये यही किया करो। लूका अध्याय बाईस इसका बीसवाँ पद है **इसी रीति से उस ने बियारी के बाद कटोरा भी यह कहते हुए दिया कि यह कटोरा मेरे उस लोहू में जो तुम्हारे लिये बहाया जाता है नई वाचा है।** यह निर्गमन की पुस्तक के चौबीसवें अध्याय में मिलता है। उन वचनों को पढ़कर वे उस बलिदान के द्वारा, बलिदान के लहू के द्वारा, उन प्रतिज्ञात व्यवस्थाओं में प्रवेश करते हैं। लेकिन जब नए नियम की बात आती है, तो यीशु ने पहले ही वचन दे दिया है। प्रभु की शिक्षाएँ सब वहाँ हैं। क्योंकि प्रभु ने स्वयं को पुराने नियम के द्वारा प्रकट किया था। पुराना नियम मूसा की व्यवस्था, भजन संहिता और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को संदर्भित करता है। हम पुराने नियम को नहीं पढ़ते हैं। इसके द्वारा ही मसीह प्रकट होता है। यह तब होता है जब हम इसके द्वारा मसीह को प्रकट करना शुरू करते हैं कि हम वचन की वास्तविकता में आते हैं। हमारी कल्पना में मसीह को देखकर और उस क्रॉस की कल्पना करके वास्तविकता को प्रकट करने की आवश्यकता नहीं है। हमें वचन के द्वारा प्रकट होना चाहिए। हम उस वास्तविकता में प्रवेश करते हैं जब हम वचन के माध्यम से मसीह को देखना शुरू करते हैं। यह केवल जीवित आ सकता है और आत्मा में प्राप्त कर सकता है। फिर यहाँ भी एक नियम है। लूका के बाईसवें अध्याय के बीसवें पद में **मैं अपने खून में नया कानून देखता हूँ।** जैसा कि मैंने आपको याद दिलाया, वह नया कानून वह कानून है जो हमारे दिलों में लिखा है। इब्रानियों अध्याय आठ, इसका आठवाँ पद **पर वह उन पर दोष लगाकर कहता है, कि प्रभु कहता है, देखो वे दिन आते हैं, कि मैं इस्त्राएल के घराने के साथ, और यहूदा के घराने के साथ, नई वाचा बान्धूंगा।** इब्रानियों के नाम पत्र के आठवें अध्याय का दसवाँ पद इस समय के बाद यही है कानून का जमाना फिर प्रभु कहता है, कि जो वाचा मैं उन दिनों के बाद इस्त्राएल के घराने के साथ बान्धूंगा, वह यह है, कि मैं अपनी व्यवस्था को उन के मनो में डालूंगा, और उसे उन के हृदय पर लिखूंगा। यही नया कानून है। और मैं उन का परमेश्वर ठहरूंगा, और वे मेरे लोग ठहरेंगे। तब हम उस वचन के आधार पर जो हमारे हृदय में लिखा है, परमेश्वर के लोग बन जाते

हैं। मैं हूँ उनका परमेश्वर परमेश्वर है लेकिन एक बार जब मैंने उस अंश को पढ़ा तो मुझसे पूछा गया क्या यह आपके जीवन में परमेश्वर परमेश्वर है? परमेश्वर वह है जिसके बारे में हम कुरिन्थियों के पंद्रहवें अध्याय में सोचते हैं। जब हम कहते हैं कि यह परमेश्वर का राज्य है कोई और देश नहीं है, कोई और इच्छा नहीं है, कोई अन्य इच्छा नहीं है सब कुछ परमेश्वर की इच्छा में है। क्या मुझमें हर चीज में ईश्वर है? तो जब हम इस स्तर तक बढ़ते हैं, तो पवित्र परमेश्वर ऐसे व्यक्ति को देखता है और कहता है, मैं उसका परमेश्वर हूँ। या शैतान दूसरी ओर से कहेगा कि वह उसका परमेश्वर है या उसका परमेश्वर अधिक है। फिर उसमें मेरा भी एक मालिक है, जो मैं कहता हूँ, वह बहुत मानता है। वह अपने शरीर के सभी अंगों को पाप के हवाले कर देता है। फिर वह व्यावहारिक कारणों से आपके पास आता है। कोई आवश्यकता हो तो परमेश्वर कहना व्यावहारिकता के लिए है। तो हमें खुद से पूछना होगा, क्या हमारे जीवन में परमेश्वर हैं? क्या हमारे जीवन में हर चीज में परमेश्वर है? वह उच्चतम स्तर है। ऐसे हैं परमेश्वर के लोग। यह कोई विचार नहीं है, यह आपको व्यावहारिक स्तर पर लाने के लिए एक स्वर्गीय सलाह है। मुझे इस लक्ष्य के साथ जीना है कि हर चीज में परमेश्वर मेरे अंदर है। अगर उस लक्ष्य की यात्रा अभी शुरू नहीं हुई है तो उसे शुरू करना होगा। बाकी सब कुछ औपचारिक है। हम गाते हैं, हम बाइबिल पढ़ते हैं, हम सभाओं में जाते हैं, हम अपनी इच्छा के अनुसार जीते हैं। हम जो कुछ भी जीते हैं वह परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप होना चाहिए। तब व्यवस्था आत्मिक है, जैसा कि मैंने तुम्हें स्मरण दिलाया है लेकिन क्योंकि हम शारीरिक हैं, परमेश्वर ने एक नए युग की शुरुआत की है। वह युग आध्यात्मिक युग है। नया नियम कहता है कि अनुग्रह का युग हमेशा आत्मा का युग होता है जब मैं बाइबल की जाँच करता हूँ। यह थोड़ा बेहतर है। बाइबल में अनुग्रह के युग के लिए कोई शब्द नहीं है। अनुग्रह है लेकिन आध्यात्मिक क्षेत्र के माध्यम से हमें अनुग्रह प्रदान किया जाता है। अनुग्रह का वह युग ब्रेथेन चर्च की शिक्षाओं के माध्यम से आया। अनुग्रह का युग लगभग दो सौ साल पहले आया था जब बपतिस्मा आया था। क्योंकि इसका इस्तेमाल शायद उस समय से आया होगा जब मार्टिन लूथर साथ आए थे जब वे एक मिशन पर थे। लेकिन मैं जो कहना चाहता हूँ वह आध्यात्मिक युग या

आत्मा का युग है। क्योंकि सब कुछ आत्मा के द्वारा है। अनुग्रह प्राप्त करना अनुग्रह की आत्मा कहलाता है। आत्मा के द्वारा ही हमें अनुग्रह प्राप्त होता है। इसलिए यदि कोई कहता है कि यह अनुग्रह का युग है, तो उनसे बहस न करें कि यह गलत है। हम वचन में इनमें से कई चीजों का दुरुपयोग करते हैं। लेकिन मैं यह नहीं कह रहा कि यह सब गलत है। मेरा मतलब है कि इसे थोड़ा और सही तरीके से इस्तेमाल किया जाना चाहिए। बाइबल की दृष्टि से यह कहना थोड़ा अधिक सही है कि आपने पश्चाताप किया और बपतिस्मा लिया, इससे अधिक कि आप बचाए गए और बपतिस्मा लिया गया। बाइबल यह नहीं कहती है कि उसे बचाया गया और बपतिस्मा दिया गया। मरकुस के सोलहवें अध्याय के सोलहवें पद में **जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।** क्या बचाए जाने के बाद बपतिस्मा लेना आवश्यक है? मुझे नहीं पता। इसलिए हमें यह कहने की ज़रूरत नहीं है कि यह कहना गलत है कि किसी को बचाया गया और बपतिस्मा दिया गया। लेकिन जब हम कहते हैं कि बाइबल का सही उपयोग होता है, जब हम इन वचनों को आत्मा में ग्रहण करना शुरू करते हैं, तभी हम यह सब समझते हैं। यह बहुत खतरनाक है जब कुछ का दुरुपयोग किया जाता है। मुझे बचाए जाने और बपतिस्मा लेने का विचार आया। मैं तो पहले ही बच गया था। तब मुझे मोक्ष के लिए बढ़ने का क्षेत्र समझ में नहीं आया। इसलिए मैंने बहुत साल खो दिए हैं। इसका दुरुपयोग करना बहुत खतरनाक है। हम जिस विषय के बारे में सोच रहे हैं वह पत्थर में लिखा हुआ एक दस्तावेज है। हम उस दस्तावेज़ के अधीन हैं। रोमियों की पत्री के सातवें अध्याय का पहला पद पढ़ें। **हे भाइयो, क्या तुम नहीं जानते मैं व्यवस्था के जानने वालों से कहता हूँ, कि जब तक मनुष्य जीवित रहता है, तब तक उस पर व्यवस्था की प्रभुता रहती है?** यह आदम और हव्वा के बारे में है। जब तक वह जीवित रहा तब तक व्यवस्था का आदम पर अधिकार था। कितने लोग समझते हैं कि मैं क्या कह रहा हूँ? **और यदि तुम आत्मा के चलाए चलते हो तो व्यवस्था के आधीन न रहे।** अगर हम इसे एक अलग अर्थ में पढ़ें क्या होगा अगर हम आत्मा में नहीं चलते हैं? हम व्यवस्था के अधीन हैं। इसका मतलब है कि हमारा पुराना मनुष्य अभी भी जीवित है। वह मरा

नहीं है। जब वह मरता है तब ही आत्मा हम पर शासन करने में सक्षम होती है। याद रखें, जब हमने बपतिस्मा लिया था, तो हमने विश्वास से स्वीकार किया था कि मैं मसीह के साथ मर गया था। लेकिन वहां से हमें उस हकीकत पर आना होगा। जब हम स्नानागार से बाहर निकलते हैं तो हमें पता चलता है कि हमारा पुराना मनुष्य अभी भी वहीं है। लेकिन एक अच्छे समूह के लिए, वह शरीर मरता हुआ नहीं लगता। आज चर्च के भीतर अच्छी उपजाऊ मिट्टी है ताकि मंदिर के क्रम में मांस विकसित हो सके। पाप के फलने-फूलने के लिए अच्छी उपजाऊ मिट्टी है, मैं उसका वर्णन नहीं करूंगा। वह कोई अपवाद नहीं था। फिर जब वह चर्च आया तो क्या हुआ? जब आप चर्च आते हैं तो यह एक अपवाद है और जब आप वहां जाते हैं तो एक अपवाद होता है। जैसा कि एक भाई कहता है, अपराधबोध तब आता है जब हम चर्च से घर जाते हैं। इसका क्या कारण है? गुरु ने जो उपदेश दिया वह पसंद नहीं आया था जब मैंने बहुत से भाइयों को यहाँ चलते हुए देखा, तो मैंने उन्हें यह कहते सुना, 'ओह, क्या तुमने उसका चलना देखा या तुमने उसे चलते हुए नहीं देखा?' फिर वे कहते हैं कि उन्हें जो कपड़ा पहना था, वह उन्हें पसंद नहीं आया, साड़ी पसंद नहीं आई या उसका रंग नहीं देखा। ऐसे में हमारे लिए बेहतर होगा कि हम चर्च न जाएं। मैंने यह नहीं कहा कि चर्च मत जाओ। मुझे इन सब से मुक्ति दिलाने के लिए कहा गया था। चर्च परमेश्वर का प्रावधान है। परमेश्वर चर्च को जोड़ने के लिए आते हैं। परमेश्वर आपको और मुझे व्यक्तिगत रूप से लेने नहीं आते हैं। हमें चर्च का हिस्सा होना चाहिए। यह करने के लिए सभ्य बात है, और इसे वहीं समाप्त होना चाहिए। जिन लोगों की भीड़ नहीं है उन्हें एक होना चाहिए, क्योंकि चर्च एक शरीर है। हम आमतौर पर कहते हैं कि पांच हजार हैं और दस हजार हैं लेकिन क्या आप एक शरीर हैं? दूसरे कहते हैं कि हमारे पास एक नर्सरी है। दस लोग हैं लेकिन क्या आप एक शरीर हैं? चाहे हम बड़े हों या छोटे, हमें परमेश्वर और एक दूसरे के साथ संगति की आवश्यकता है। यह पिता और पुत्र के साथ संगति के माध्यम से है कि हम भाइयों के साथ संगति में आते हैं। यह वचन के अनुसार एक छोटा समूह है। लूका अध्याय 12 पद बत्तीस में **हे छोटे झुण्ड, मत डर; क्योंकि तुम्हारे पिता को यह भाया है, कि तुम्हें राज्य दे।** यहोवा ने हम से यही कहा है। यह बाइबिल का

नियम है। मत्ती अध्याय अठारह के बीसवें पद में **क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं वहां मैं उन के बीच में होता हूं**॥ प्रभु कहते हैं। एक छोटी संख्या का उल्लेख है। यहां दो लोग एक नहीं हो सकते, फिर हम एक हजार लोगों को एक साथ कैसे रख सकते हैं। इसलिए हमें अपने घर में एक होना चाहिए। यह शर्त पत्नी या पति को बताई जानी है। यदि हम एक नहीं हो जाते हैं, तो हम कलीसिया की व्यवस्था पर नहीं आते हैं। यह पारिवारिक जीवन की शर्तों के तहत भी नहीं आता है जिसे परमेश्वर ने निर्धारित किया है। इसलिए हमें दैवीय व्यवस्था को ही दैवीय व्यवस्था के रूप में देखना चाहिए। इसका कारण यह नहीं देखा जा सकता है क्योंकि यह अवतार है। हम अभी तक आत्मा की आज्ञाकारिता में नहीं आए हैं। आइए हम उस पद की ओर लौटते हैं जिसे हम रोमियों अध्याय 7 के पहले पद में पढ़ते हैं **हे भाइयो, क्या तुम नहीं जानते मैं व्यवस्था के जानने वालों से कहता हूं, कि जब तक मनुष्य जीवित रहता है, तक तक उस पर व्यवस्था की प्रभुता रहती है?** जब आदम की मृत्यु हुई, तो व्यवस्था का उस पर कोई अधिकार नहीं था। इसलिए जब यह कहने की बात आती है कि यह कानून एक बाहरी कानून है, तो यह हमेशा हम पर ही आरोप लगाता है। लेकिन अब वह सब समय समाप्त हो गया है। अब कोई दोष नहीं है क्योंकि किसी के भीतर शब्द नहीं है। लेकिन एक बिंदु पर वे दोषी महसूस करते थे। समस्या पैदा करने वाला व्यक्ति जानता है कि उसने गलत किया है। यह सिद्धांत कहता है कि बहुतों के जीवन में पाप का दंड है ऐसा वे इतनी जल्दी देखते हैं। मैं ऐसे बहुत से लोगों को जानता हूँ जो पवित्रता का वचन देते हैं और कुछ समय बाद वे इसके लिए प्रयास करते हैं लेकिन ऐसा नहीं होता है। मैंने वह भी देखा है। क्योंकि यह उन्हें दोष देता रहता है। यहीं पर हमें अनुग्रह की शक्ति को समझने की आवश्यकता है। वहीं दया आसन है। केवल कृपा कहना ही काफी नहीं है। आप केवल अनुग्रह के सिंहासन पर जा सकते हैं। इससे छुटकारा पाने के लिए हमें वहां जाना होगा। यह कहना खतरनाक है, "परमेश्वर मुझे क्षमा करें," और फिर वापस जाकर जानबूझकर पाप करें। इस प्रकार, यदि हम जानबूझकर पाप करते हैं, तो सब कुछ समाप्त हो जाता है। तब हमें इससे मुक्त होने के लिए अभयारण्य के करीब आना चाहिए। इसलिए यह कहने की पद्धति का पालन

न करें, 'जब मैंने पाप किया हो तो परमेश्वर मुझे क्षमा करें।' हमें उस देवलय में कुछ समय बिताना चाहिए। आपको उस जीवन में आने के लिए समाज में होना होगा। इसके अलावा, जैसा कि मैं आपको हमेशा याद दिलाता हूँ, परमेश्वर के साथ संगति में आने का मतलब दस मिनट में आना और अपनी जरूरतों को बताना और उठना नहीं है। यहीं से हमें पाप से मुक्ति मिलती है। फिर अभियोग का क्षेत्र है और यही वह दस्तावेज है जो इसके बाहर लिखा गया था। हम अनुग्रह के क्षेत्र को नहीं देख सकते हैं जो कहता है कि हम हमेशा भटक गए हैं। अर्थात्, हमें यह जानना चाहिए कि अनुग्रह के सिंहासन पर विराजमान दयालु प्रभु न केवल हमारे महायाजक हैं, बल्कि हमें क्षमा करने वाले भी हैं। जो हमें उस से पूरी तरह छुड़ा सकता है, और हमें पूरी तरह से बचा सकता है। आइए हम उस पद पर लौटते हैं जिसे हम पढ़ते हैं रोमियों अध्याय 7, पद 2 **क्योंकि विवाहिता स्त्री व्यवस्था के अनुसार अपने पति के जीते जी उस से बन्धी है, परन्तु यदि पति मर जाए, तो वह पति की व्यवस्था से छूट गई।** वहां हम यह भी कह सकते हैं कि यह एक कानूनी संबंध है। यही हमने निर्गमन की पुस्तक के चौबीसवें अध्याय में देखा। यानी पत्थर में लिखा हुआ दस्तावेज दिल की मांस प्लेट पर नहीं लिखा होता है, यह आध्यात्मिक दस्तावेज हम जीवों के भीतर नहीं लिखा है। चट्टान पर लेटना, किताब पर लेटना या फोन पर लेटना। हमारे वहां लेटने का कोई मतलब नहीं है। परन्तु हम जानते हैं कि इस्राएल के बच्चे व्यवस्था से बंधे थे।

एक संबंध था यह यहूदी ईसाइयों के लिए लिखा गया है। लेकिन यह हमारे जीवन में भी है। हमें इसे अपने जीवन में थोड़ा और स्पष्ट रूप से समझने की जरूरत है। क्योंकि वे जल्द ही समझ जाएंगे कि उन्हें अभी भी इस कानून से बहुत प्यार है। चर्च इस खतना पर वापस जाते हैं। हम इसे गलतिया की कलीसिया में देखते हैं। वे उस क्षेत्र में जाते हैं जहाँ पुराना फसह मनाया जाता है। उस क्षेत्र में जाना जहां त्योहार मनाए जाते हैं। वे ऐसे क्षेत्र में जाते हैं जो महीनों और दिनों को देखता है। फिर उससे बांध दिया जाता है। यहां तक कि जो लोग सामुदायिक कलीसियाओं से आते हैं वे विश्वास करते हैं और बपतिस्मा लेते हैं और बचाए जाते हैं, फिर भी उनका अतीत के साथ बहुत कुछ करना होता है। मैं इसे अपने आध्यात्मिक जीवन में देखता हूँ। यह

चर्च में भी देखा जाता है। उनका अभी भी अन्य चर्चों के लोगों से बहुत संबंध हैं। आप इसे केवल काट सकते हैं, आप इसे केवल हल्के से काट सकते हैं। या यह एक पीढ़ी के लिए एक समुदाय के रूप में चलेगा। हम अपनी युवावस्था में यही कहते हैं जब हमें अभी ऐसा नहीं कहना चाहिए। समुदाय का अर्थ है बपतिस्मा लेना और फिर से एक समुदाय होना और अब केवल एक चीज जो बपतिस्मा लेती है वह शेष समुदाय है। अब यह एक आदर्श बन गया है। अर्थात् पवित्रता और अलगाव का अर्थ नहीं जानता। रोमियों अध्याय 7, पद 2 पढ़िए। **क्योंकि विवाहिता स्त्री व्यवस्था के अनुसार अपने पति के जीते जी उस से बन्धी है, परन्तु यदि पति मर जाए, तो वह पति की व्यवस्था से छूट गई। सो यदि पति के जीते जी वह किसी दूसरे पुरुष की हो जाए, तो व्यभिचारिणी कहलाएगी, परन्तु यदि पति मर जाए, तो वह उस व्यवस्था से छूट गई, यहां तक कि यदि किसी दूसरे पुरुष की हो जाए, तौभी व्यभिचारिणी न ठहरेगी। सो हे मेरे भाइयो, तुम भी मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिये मरे हुए बन गए, कि उस दूसरे के हो जाओ, जो मरे हुआओं में से जी उठा: ताकि हम परमेश्वर के लिये फल लाएं।** व्यवस्था के संबंध मृत व्यवस्था से संबंध। कम किताब में लिखा है कि हम किताब को गहराई से सीखते और पढ़ते हैं लेकिन जीवन नहीं तब हमें उस रिश्ते से छुटकारा पाना होगा। अब वह समय आ गया है जब शब्द की आवश्यकता नहीं रह गई है। लेकिन कुछ अभी भी वचन पढ़ना सीख रहे हैं। नहीं। अब तुम वचन का अध्ययन करने आए हो, यदि तुम इसे जानते हो, तो यह व्यवस्था है। यह एक बेजान दस्तावेज़ है। हम सभी को सिखाया जाता है कि यह नया नियम है। लेकिन अगर इसमें जान नहीं है तो पुराना दस्तावेज़ बेजान दस्तावेज़ है। दस्तावेज़ में जीवन है लेकिन जीवन में हमारे पास नहीं है। हमें इससे जीवन नहीं मिला। फिर हमें इससे छुटकारा पाना होगा। जब प्रभु यीशु मसीह क्रूस पर मरे, तो आदम ने मनुष्य को क्रूस पर चढ़ाया, जो हमारे पाप के अधीन था। उसने एक दस्तावेज़ को सूली पर चढ़ा दिया जो उस दस्तावेज़ की तरह बेजान था। तब हमें इन दो क्षेत्रों में शामिल होना होगा जब हम मसीह में शामिल होंगे। हमें कानून के लिए मरना चाहिए जैसे हमें पाप के लिए मरना चाहिए। कितने लोग उस आध्यात्मिक संदेश को प्राप्त कर रहे हैं? इसका मतलब यह नहीं है कि

कानून को छीन लिया जाना चाहिए, बल्कि यह हमारे भीतर जीवन का कानून बन जाना चाहिए। व्यवस्था हमारे दिलों में लिखा है। व्यवस्था की धार्मिकता हम में पूरी होती है। लेकिन एक आत्मा होने की जरूरत है और यही काम करने की जरूरत है। आत्मा और जीवन को इन दो शब्दों को याद रखना चाहिए। यदि दोनों के लिए नहीं तो हम अभी भी व्यवस्था के युग में हैं। जब हम कहते हैं कि व्यवस्था का युग है, तो केवल जीवन न होने का अनुष्ठान होता है। सभा में आने का रिवाज है, शाम की प्रार्थना एक रस्म है, बाइबल के दो अध्यायों को पढ़ने की प्रथा है। उपवास हमारे शरीर के लिए कई चीजों को पूरा करने के लिए प्रार्थना करने के लिए होता है। फिर उसमें आत्मा का जीवन नहीं है। प्रेरित यहाँ एक शरीर के बारे में लिख रहा है जो पापी है या पाप के अधीन है, पत्नी पति के साथ एक बेजान दस्तावेज के साथ रिश्ते में होगी जिसे कहा जाता है कि वह एक जीवन है। तब प्रेरित कहता है कि जब तक आपके पति की मृत्यु नहीं हो जाती, तब तक आप किसी दूसरे पुरुष की पत्नी नहीं हो सकती हैं। तो यह हमारे लिए संदेश है। अगर मैं इसे फिर से कहूँ यह पत्नी भी मर जाएगी, क्योंकि वह आदम और हव्वा है। तो ऐसा कैसे होता है? वहाँ हम इन परिस्थितियों से बच सकेंगे, स्वतंत्रता में आने के लिए प्रभु यीशु नये पति के रूप में हमारे साथ शामिल होते हैं। रोमियों की पत्नी छठे अध्याय के तीसरे पद में **हम मसीह में बपतिस्मा लेते हैं।** यह एक शादी है, यह एक रिश्ता है। फिर जब हम बपतिस्मा लेते हैं तो हम पुराना पति और पुराना आदमी को दफनाते हैं। मसीह पहले से ही हम सब को लेकर उठाए जा चुके थे और उन्हें सूली पर चढ़ाया गया था। उस मसीह में शामिल होने के लिए बपतिस्मा लेना है। यह इतना गंभीर है। कुलुस्सियों 2: 2 **और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए, और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके, जिस ने उस को मरे हुआओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे।** सिर्फ इधर-उधर नहीं डूबना उस बपतिस्मे में एक व्यापारिक शक्ति है। मैं इन सच्चाइयों को जानता हूँ। वहीं पुनर्जन्म होता है। शीर्ष पर आने पर क्षमा, विश्वास द्वारा औचित्य दो पुनरुत्थान आप जी उठे हैं। फिर उस बपतिस्मे में दो मौतें हुईं। जो लोग? एक बात के लिए, हमारा पुराना आदमी, वह आदमी जिसका पाप के साथ संबंध था, हमें मसीह में शामिल होने के लिए बाध्य किया गया था।

जैसे, यदि हम आत्मा की आज्ञाकारिता में नहीं हैं, तो अब हम एक मृत दस्तावेज़ के अधीन हैं। पहले पाठों के अधीन है। हम किसी भी दस्तावेज़ के अधीन हैं। फिर उस दस्तावेज़ को भी मरना है। यही प्रेरित रोमियों ने सातवें अध्याय के चौथे पद में लिखा है **सो हे मेरे भाइयो, तुम भी मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिये मरे हुए बन गए, कि उस दूसरे के हो जाओ, जो मरे हुआओं में से जी उठा: ताकि हम परमेश्वर के लिये फल लाएं।** परमेश्वर ने दस्तावेज़ नहीं हटाया। दस्तावेज़ आध्यात्मिक है। लेकिन हमारे पास ये समारोह हैं जिन्हें हम मनाते हैं और उन सभी को मरना पड़ता है। तो ये आध्यात्मिक सिद्धांत यहां नए सिद्धांत हैं जब सत्य की आत्मा हमारे भीतर रहती है और ये नए सिद्धांत हमारे दिल में परमेश्वर की आत्मा द्वारा लिखे गए हैं। हम बपतिस्मा के माध्यम से परमेश्वर के सिद्धांत में प्रवेश करते हैं ताकि नया सिद्धांत हमारे जीवन में एक वास्तविकता बन सके। तब बपतिस्मा इतना गंभीर है। उसके भीतर एक प्रेरक शक्ति है। रोमियों की पुस्तक सातवें अध्याय के छठे पद में लिखी गई है। **परन्तु जिस के बन्धन में हम थे उसके लिये मर कर, अब व्यवस्था से ऐसे छूट गए, कि लेख की पुरानी रीति पर नहीं, वरन आत्मा की नई रीति पर सेवा करते हैं॥** सीधे शब्दों में कहें, तो शारीरिक लोग केवल आध्यात्मिक बन सकते हैं। अध्यात्मवादियों के पास केवल आत्मा में लिखा हुआ परमेश्वर का वचन हो सकता है। तब उसे उस जीवन के वचन के अनुसार आत्मा की आज्ञाकारिता में चलना चाहिए: वह मसीह में नया मनुष्य है। उसमें जीवन की आत्मा की आज्ञा है। अगर हम ऐसे नहीं बनते हैं तो हम अभी भी कानून के युग में हैं। जो आत्मा के अनुसार चलते हैं वे व्यवस्था से मुक्त हैं। यानी जिन क्षेत्रों का मैंने वर्णन किया है। उसमें एक और दो बड़ी मौत क्या हुआ? पाप का आदमी मर गया। जो पाप से बंधा है, जो संबंधित है, वह मर जाता है। इसी तरह, यह मृत दस्तावेज़ पाप के संबंध में मरने वाले की व्यवस्था है। फिर उस मृत दस्तावेज़ को भी मरना है। तब दासी और उसके पुत्र को घर से निकाल देना चाहिए। गलातियों 4:21 के पदों का अध्ययन करना अच्छा है। पढ़िए वो श्लोक **तुम जो व्यवस्था के अधीन होना चाहते हो, मुझ से कहो, क्या तुम व्यवस्था की नहीं सुनते?** इसलिए यहाँ गलातिया की कलीसिया में वे खतने के लिए वापस जाते हैं यह उन लोगों के लिए लिखा गया है

जो उन पुराने यहूदी सिद्धांतों पर वापस जाते हैं। लेकिन ऐसा नहीं होता अगर प्रेरित इस समय लिख रहे होते। क्योंकि हम किसी दस्तावेज़ में नहीं हैं, लगभग सभी लोग पाप के दस्तावेज़ में जीते हैं। तब प्रेरित अब उसी के अनुसार लिखेंगे। गलातियों अध्याय 4 का पद 22 पढ़िए। **यह लिखा है, कि इब्राहीम के दो पुत्र हुए; एक दासी से, और एक स्वतंत्र स्त्री से। परन्तु जो दासी से हुआ, वह शारीरिक रीति से जन्मा, और जो स्वतंत्र स्त्री से हुआ, वह प्रतिज्ञा के अनुसार जन्मा।** तो यहाँ दो जन्म हैं। आदम मनुष्य से पैदा हुआ, परमेश्वर से पैदा हुआ गलातियों अध्याय 4, पद 24 को पढ़िए। **इन बातों में दृष्टान्त है, ये स्त्रियां मानों दो वाचाएं हैं, एक तो सीनै पहाड़ की जिस से दास ही उत्पन्न होते हैं; और वह हाजिरा है। और हाजिरा मानो अरब का सीनै पहाड़ है, और आधुनिक यरूशलेम उसके तुल्य है, क्योंकि वह अपने बालकों समेत दासत्व में है। पर ऊपर की यरूशलेम स्वतंत्र है, और वह हमारी माता है।** फिर उसके ऊपर का यरूशलेम आत्मिक है। यदि आप एक पृथ्वी वासी हैं तो आप अभी भी उस पुराने दस्तावेज़ में पड़े हैं। बपतिस्मा लिया लेकिन फिर भी पृथ्वी वासी। इसलिए पृथ्वी वासी और स्वर्गीय में अंतर है। तब हमें सचमुच स्वर्ग में आना चाहिए। क्योंकि अगर हम परमेश्वर से पैदा होते, तो हमारा जीवन स्वर्ग में होता। हम ऐसा नहीं सोचते। परमेश्वर के राज्य की व्यवस्था हमारे पास आ रही है। जब हम उस स्थिति में रहते हैं तो हम स्वर्ग बन जाते हैं। गलातियों अध्याय 4 का पद 28 पढ़ें। **हे भाइयो, हम इसहाक की नाई प्रतिज्ञा की सन्तान हैं।** वादा किए गए बच्चे वे होते हैं जो नया जन्म लेते हैं। परमेश्वर से जन्मे, आत्मा से जन्मे, वे प्रतिज्ञा की सन्तान हैं। गलातियों के चौथे अध्याय का उनतीसवाँ पद **और जैसा उस समय शरीर के अनुसार जन्मा हुआ आत्मा के अनुसार जन्मे हुए को सताता था, वैसा ही अब भी होता है।** तो आज यही समस्या है। दो जन्म होते हैं, लेकिन उसमें आत्मा के अनुसार जीने वाले के लिए युद्ध होता है। यह एक संघर्ष है, है ना? यह इन दो स्थितियों के बीच की लड़ाई है। हम जानते हैं कि जब वे दोनों गर्भ में थे तब एसाव और याकूब युद्ध में थे। वहाँ दो अवस्थाएँ हैं शरीर और आत्मा। फिर से जन्म लेने और जीने की इच्छा है। हम इसे तब समझेंगे जब हम रोमियों को लिखी पत्री का सातवाँ अध्याय पढ़ेंगे। लेकिन मांस हमेशा जीवित रहता है क्योंकि वह

आत्मा के दायरे में नहीं आता है। जीना देह की इच्छा है, इसलिए गलातियों के पांचवें अध्याय के चौबीसवें पद में **और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उस की लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है॥** यह बस आत्मा के जीवन में होता है। यह पुराना स्व, या इश्माएल, जो मांस से पैदा हुआ था, को मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया था। दूसरे अध्याय के पद 20 में गलाटियन्स क्या कहता है **मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है: और मैं शरीर में अब जो जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया, और मेरे लिये अपने आप को दे दिया।** ऐसा लिखा है। यह हमारे अंदर दुनिया को सूली पर चढ़ाए जाने का अनुभव है। हमने कल क्रूस के तीन क्षेत्रों पर ध्यान किया। अपने आप को बलिदान करें वह है आदम और हव्वा। तो अगर हम आध्यात्मिक रूप से विकसित होना चाहते हैं जब हम निम्नलिखित पदों को पढ़ेंगे तो हम समझ जाएंगे। गलातियों के चौथे अध्याय के तीस पद **परन्तु पवित्र शास्त्र क्या कहता है? दासी और उसके पुत्र को निकाल दे, क्योंकि दासी का पुत्र स्वतंत्र स्त्री के पुत्र के साथ उत्तराधिकारी नहीं होगा। इसलिये हे भाइयों, हम दासी के नहीं परन्तु स्वतंत्र स्त्री की सन्तान हैं।** तभी इसे हटाया जा सकता है। मृत दस्तावेज और अवतारी जन्म को ही हटाया जा सकता है। इसका मतलब यह नहीं है कि शरीर को सूली पर चढ़ा देना चाहिए। शरीर परमेश्वर ने बनाया है। लेकिन हमें इस शरीर में किए गए पाप से छुटकारा पाने की जरूरत है। रोमियों अध्याय 6 के पद 22 में यही कहा गया है **क्योंकि उन का अन्त तो मृत्यु है परन्तु अब पाप से स्वतंत्र होकर और परमेश्वर के दास बनकर तुम को फल मिला जिस से पवित्रता प्राप्त होती है, और उसका अन्त अनन्त जीवन है।** फिर अगर तुम आजादी चाहते हो तो तुम्हें दूसरे रास्ते से जाना होगा। इससे पहले भी, हमारे प्रभु यीशु मसीह ने अपने जीवन के माध्यम से हमारे लिए इसे संभव बनाया। लेकिन हम इन क्षेत्रों में केवल तभी मुक्त होते हैं जब वे जो मसीह के पास आने के लिए बपतिस्मा लेते हैं, आत्मा के अनुसार और जीवन की आत्मा के सिद्धांत में जीना शुरू करते हैं। अर्थात् रोमियों अध्याय छह के सत्रह से अठारह पदों में कहा गया है **परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि तुम जो पाप के**

**दास थे तौभी मन से उस उपदेश के मानने वाले हो गए, जिस के सांचे में ढाले गए थे। और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए।** आपको वहां मिली सलाह याद रखें अर्थात् यह जीवन की आत्मा का सिद्धांत है। उसी परमेश्वर की आत्मा हम में और हमारे व्यक्तिगत शब्द ध्यान में वास करती है, जब हम संगति में आते हैं, और जब छोटे समूह एक दूसरे को वचन का प्रचार करते हैं हमारे जीवन के लिए हर जगह परमेश्वर का वचन अंदर लिखा होना चाहिए। यह नया नियम है, नहीं तो यह एक रस्म बन जाएगी जिसे अलग कर दिया गया है। वह पुराना दस्तावेज है। यह एक मरा हुआ दस्तावेज है। जब उन्होंने खतना और बलिदान किया था, तो आज हमारे पास संगति, तालियाँ और गीत हैं। परन्तु यदि उस में जीवन न हो, तो वह पुराना अब भी जीवित है, परमेश्वर की सन्तान, ऐसा समूह अभी भी व्यवस्था के युग में है। यानी यह डेड डॉक्यूमेंट के अधीन है। इसे मरना है पाप के साथ हमारा रिश्ता मरना है। जैसा कि हम यहां उन लोगों के बारे में पढ़ते हैं जो पाप में मर गए हैं, व्यवस्था में मरना संभव है। व्यवस्था के अनुसार मरने का क्या मतलब है? मृत सिद्धांत, मृत रीति-रिवाज सभी मरना चाहिए। लेकिन याद रखें, कानून में न्याय होता है। यह परमेश्वर का वचन है। परन्तु जब बहुत से लोग जो जीवित नहीं हैं, वे इसका पालन करते हैं, तो यह प्रभु का सिद्धांत है सिद्धांत थोड़ा मोटा है प्रभु यीशु मसीह ने हमें पुराने नियम की व्यवस्था, भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तक और स्तोत्रों की पुस्तक में पाई जाने वाली दिव्य शिक्षाओं से दोगुना तेज सिद्धांत दिया है। फिर जब वह सिद्धांत हम में लिखा जाता है और हम जीवन की आत्मा के सिद्धांत में जीना शुरू करते हैं, तो हम नए नियम के वारिस होते हैं। ये नए नियम के विश्वासी हैं, नए नियम के शिष्य हैं, ये हैं सच्चे साक्षी, फिर पाप में मरना, कानून के सिलसिले में मरो। इसलिए जब हम मसीह में बपतिस्मा लेते हैं, तो यह पुराना सिद्धांत और मृत सिद्धांत और ये सिद्धांत जो मानव हैं

और एक लिखित दस्तावेज जो कहता है कि मत छुओ, मत चखो, मत छुओ - मत पकड़ो, स्वाद मत लो, जो नहीं देखना है उसे मत देखो -लेकिन फिर वह जीवन नए दस्तावेज़ के माध्यम से आना चाहिए। फिर पकड़ने के लिए कुछ नहीं है और छूने के लिए कुछ भी नहीं है। क्योंकि हमारे भीतर एक दस्तावेज है और हम उसकी पूर्णता

में जीते हैं। हम नहीं देख सकते कि क्या गलत है। जब हम कहते हैं कि उसमें बीज वास करता है, तो यह सच है, परमेश्वर की सन्तान, हम यह न कहें कि यह पहला कदम उठाए बिना संभव नहीं है। प्रेरित हमें सलाह देते हैं कि उस उच्च स्तर पर, उस एक जीवन में कैसे आएं।

आमेन

For Technical Assistance

Amen TV Network  
Trivandrum,Kerala  
MOB : 999 59 75 980  
755 99 75 980

Youtube : amentvnetwork

Contact

Pastor.Benny  
Thodupuzha  
MOB: 9447 82 83 83





